नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

सड़कों की दुर्दशा बड़ी समस्या बनी

बरसात ने इस साल मध्य प्रदेश की सड़कों का सच फिर उजागर कर दिया है. कहीं सड़कें बह गईं, कहीं गड्ढों ने पूरा रास्ता निगल लिया. हालात यह हैं कि शहरों की मुख्य सड़कें भी तालाब जैसी नज़र आती हैं और ग्रामीण अंचल की पगडंडियां पूरी तरह गायब हो चुकी हैं. स्थिति यह है कि मध्य प्रदेश हाई कोर्ट को सड़कों पर बढ़ते गड्ढों पर हस्तक्षेप करना पड़ा है. दरअसल, यह केवल एक मौसमी संकट नहीं है, बल्कि दशकों से चली आ रही उस लापरवाही और भ्रष्टाचार का आईना है, जिसने विकास के सपनों को गड्ढों में धकेल दिया है.

सड़कें किसी भी राज्य की धमनियां होती हैं. इन्हीं से उद्योग-व्यापार को गति मिलती है, किसानों की उपज मंडी तक पहुंचतीं है और लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी सहजता से जी पाते हैं. लेकिन जब सड़कें ही जर्जर हो जाएं, तो अर्थव्यवस्था की नब्ज़ भी थम जाती है. आज प्रदेश में यही हो रहा है. ट्रक और ट्रैक्टर सड़क पर अटक रहे हैं, दुपहिया सवार जान हथेली पर रखकर निकलते हैं और एंबुलेंस तक जाम में फंस जाती हैं.

असल कारण सबको मालूम हैं, लेकिन जिम्मेदारी कोई नहीं लेता. सार्वजनिक निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार एक स्थायी रोग बन चुका है. करोड़ों का बजट हर साल सड़कों पर खर्च होता है, लेकिन हर बरसात में वही सड़क उखड़ जाती है. ठेकेदार घटिया सामग्री डालते हैं, अफसर आंख मूंद लेते हैं और मंत्री-नेता उद्घाटन कर संतोष की डुगडुगी बजा देते हैं. परिणाम-जनता भुगतती है. गुस्सा, अविश्वास और असुरक्षा-यही विरासत आम नागरिक के हिस्से आती है.

केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी बार-बार गुणवत्ता पर जोर देते रहे हैं. उनकी पहल पर देश में कई उत्कृष्ट परियोजनाएं खड़ी हुईं. लेकिन प्रदेश की तस्वीर बताती है कि केंद्रीय योजनाएं भी यहां भ्रष्टाचार की चपेट से अछूती नहीं रहीं.

प्रदेश में ज़रूरत है एक ठोस एक्शन प्लान की, जिसमें निर्माण से लेकर रखरखाव तक हर चरण पर कड़ाई और पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए. सड़कें बारहमासी हों, इसके लिए तकनीकी मानकों को ईमानदारी से लागू करना होगा. ठेकेदारों और अधिकारियों को जवाबदेह बनाना होगा. केवल बजट बढ़ाने से समाधान नहीं निकलेगा, बल्कि हर खर्च की ईमानदार निगरानी ही बदलाव ला सकती है.

सवाल यह भी है कि जनता कब तक चुप रहेगी? लोकतंत्र में नागरिक केवल वोटर नहीं होते, बल्कि प्रहरी भी होते हैं. खराब सड़कों पर शिकायत दर्ज करना, सोशल मीडिया से लेकर जनप्रतिनिधियों तक दबाव बनाना अब ज़रूरी है.

दरअसल, सड़कों की यह दुर्दशा सिर्फ़ डामर और कंक्रीट की कमजोरी नहीं है, यह शासन-प्रशासन की नीयत और व्यवस्था की पोल खोलने वाली तस्वीर है. अगर अब भी सुधार नहीं हुआ, तो गड्ढों में सिर्फ सड़कें नहीं, बल्कि प्रदेश की तरक्की और जनता का भरोसा भी समा जाएगा. सरकार को तय करना होगा—क्या वह गड्ढों पर राजनीति करेगी या गड्ढों को भरकर विकास की राह बनाएगी ?

सड़कें किसी भी प्रदेश के विकास की जीवनरेखा होती हैं. बहरहाल, सुगम और मजबूत सड़कें उद्योग-व्यापार को गति देती हैं, किसानों की उपज बाजार तक पहुंचाती हैं और निवेश आकर्षित करती हैं. सड़कें ही रोज़गार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करती हैं. इसलिए सड़क निर्माण की गुणवत्ता ही प्रदेश की आर्थिक प्रगति की दिशा तय करती है.

भारत का आर्थिक मंथन और विकास का अमृत

हरदीप एस. पुरी

> भारत की ऊर्जा संबंधी मांग – जो 2047 तक दोगुनी होने का अनुमान है – बढ़ती वैश्विक मांग का लगभग एक-चौथाई हिस्सा होगी, जिससे हमारी सफलता वैश्विक ऊर्जा स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण बन जाएगी. सरकार का दृष्टिकोण सुरक्षा को सुधार के साथ जोड़ने का रहा है. तेल की खोज का क्षेत्र 2021 में तलछटी घाटियों के 8प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 16 प्रतिशत से अधिक हो गया है. हमारा लक्ष्य 2030 तक इसे बढ़ाकर 10 लाख वर्ग किलोमीटर करना है. तथाकथित 'निषिद्ध' (नो-गो) क्षेत्रों में 99 प्रतिशत की भारी कमी ने अपार संभावनाओं को जन्म दिया है, जबकि ओपन एकरेज लाइसेंसिंग पॉलिसी (ओएएलपी) पारदर्शी व प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया सुनिश्चित करती है. गैस मूल्य निर्धारण से संबंधी नए सुधारों – जिनमें कीमतों को भारतीय कच्चे तेल की टोकरी से जोड़ा गया है और गहरे पानी एवं नए कुओं के लिए 20 प्रतिशत प्रीमियम की पेशकश की गई है – ने निवेश को बढ़ावा दिया है.

भारतीय सभ्यता में अरसे से यह मान्यता रही है कि कामयाबी से पहले परीक्षा होती है. समुद्र मंथन, जहां मथने की प्रकिया से अमृत निकला था, इसी तरह हमारे आर्थिक मंथन ने भी हमेशा ही नवीनता का मार्ग प्रशस्त किया है. वर्ष1991 के संकट से जहां उदारीकरण का जन्म हुआ; वहीं महामारी से डिजिटल उपयोग तेज हुआ. और आज, भारत को एक मृत अर्थव्यवस्था कहने वाले संशयवादियों के शोर-शराबे के बीच – तीव्र विकास, मजबूत बफर, और व्यापक अवसर – की एक तथ्यपरक कहानी उभर कर सामने आई है.

जीडीपी के ताजा आंकड़ों पर जरा गौर करें. वित्तीय वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में वास्तविक जीडीपी 7.8प्रतिशत की दर से बढ़ी. यह वृद्धि दर पिछली पांच तिमाहियों में सबसे अधिक है. महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वृद्धि व्यापक है- सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) 7.6 प्रतिशत बढ़ा है, जिसमें मैन्यूफैक्चरिंग 7.7 प्रतिशत, निर्माण 7.6 प्रतिशत और सेवा क्षेत्र लगभग 9.3 प्रतिशत बढ़ा है. नॉमिनल जीडीपी में 8.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. यह कोई मनमाने तरीके से बताई गई तेजी नहीं है. यह बढ़ते उपभोग, मजबूत निवेश और निरंतर सार्वजनिक पूंजीगत व्यय व पूरी अर्थव्यवस्था में लागत कम करने वाले लॉजिस्टिक्स संबंधी सुधारों से हासिल नतीजों का सबूत है.

भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी और सबसे तेज गति से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था है. यह तेजी के मामले में दुनिया की पहली और दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं क्रमशः अमेरिका और चीन से भी आगे निकल गई है. वर्तमान गति से, हम इस दशक के अंत तक जर्मनी को पीछे छोड़कर बाजार-विनिमय के संदर्भ में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं. हमारी गति वैश्विक स्तर पर मायने रखती है. स्वतंत्र अनुमान बताते हैं कि भारत पहले से ही वैश्विक वृद्धि में 15 प्रतिशत से अधिक का योगदान दे रहा है. प्रधानमंत्री ने एक स्पष्ट लक्ष्य रखा है — सुधारों के मजबूत होने और नई क्षमताओं के सामने आने के साथ-साथ वैश्विक वृद्धि में हमारी हिस्सेदारी बढ़कर 20 प्रतिशत तक पहुंचे.

विभिन्न बाजारों और रेटिंग एजेंसियों ने हमारे इस अनुशासन को मान्यता दी है. एसएंडपी ग्लोबल ने मजबूत विकास, मौद्रिक विश्वसनीयता और राजकोषीय सुदृढ़ीकरण का हवाला देते हुए, 18 वर्षों में पहली बार भारत की 'सॉवरेन रेटिंग' को उन्नत किया है. इस अपग्रेड से उधार लेने की लागत कम होती है और निवेशक आधार का विस्तार होता है. यह मृत अर्थव्यवस्था की धारणा को भी झुठलाता है. जोखिम के स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ताओं ने अपनी रेटिंग के साथ अपना मत दिया है.

उतना ही महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि आखिर इस सबका लाभ किसे मिला है. वर्ष 2013-14 और 2022-23 के बीच, 24.82 करोड़ भारतीय बहुआयामी गरीबी से बाहर निकल आए हैं. यह बदलाव उन बुनियादी सेवाओं – बैंक खाते, रसोई के लिए स्वच्छ ईंधन, स्वास्थ्य बीमा, नल का जल और प्रत्यक्ष हस्तांतरण – की बड़े पैमाने पर आपूर्ति पर निर्भर है जो गरीबों को विकल्प चुनने का अधिकार देता है. दुनिया के सबसे जीवंत लोकतंत्र और उल्लेखनीय जनसांख्यिकीय चुनौतियों के बीच विकास का यह पैमाना बेहद खास है. विकास का भारत का यह मॉडल आम सहमति के निर्माण, प्रतिस्पर्धी संघवाद और डिजिटल माध्यमों के उपयोग से अंतिम छोर तक सेवा प्रदान करने को महत्व देता है. यह घोषणा के मामले में धीमा, क्रियान्वयन के मामले में तेज और निर्माण की दृष्टि से टिकाऊ है. जब आलोचक हमारी तुलना तेज भागने वाले सत्तावादियों से करते हैं, तो वे इस तथ्य को नजरअंदाज कर देते हैं कि हम मैराथन धावक की तर्ज पर लंबी दूरी तय करने वाली एक अर्थव्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं.

भारत के पेट्रोलियम मंत्री के रूप में, मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूं कि हमारी ऊर्जा सुरक्षा इस तीव्र विकास में किस प्रकार सहायक की भूमिका निभा रही है. आज, भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता, चौथा सबसे बड़ा तेलशोधक (रिफाइनर) और एलएनजी का चौथा सबसे बड़ा आयातक है. हमारी तेलशोधन (रिफाइनिंग) क्षमता 5.2 मिलियन बैरल प्रतिदिन से अधिक है और इस दशक के अंत तक इसे 400 मिलियनटन प्रति वर्ष (एमटीपीए) से आगे बढ़ाने का एक स्पष्ट रोडमैप हमारे पास उपलब्ध है.

(लेखक केन्द्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हैं)

जैव विविधता प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमारी खाद्य सामग्री उपलब्ध्ता को प्रभावित नहीं होने देती

जोरदार प्रयास जरूरी हैं जैव विविधता के लिए

नीलमेघ चतुर्वेदी

जैव विविधता प्रकृति का अनुपम उपहार है. यह विविधता हमें, भोजन, ईंधन, औषधि और जरूरी सामग्री भी उपलब्ध कराती है. जैव विविधता प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमारी भोजन श्रृंखला और खाद्य सामग्री उपलब्ध्ता को प्रभावित नहीं होने देती. इसीलिए प्रकृति और हमारे लिए जैव विविधता अत्यंत ही जरूरी है. यह हमारा जीवन है. हम सभी प्रकृति के अभिन्नअंग हैं. हम जैव विविधता से मजबूती के साथ जुड़ाव रखते हैं. जंतु और वनस्पतियों, लाइकेन और फफूंद की किस्में हमारे जीवन में अत्यावश्यक है. चिंता की बात है कि जैव विविधता का आकार घट रहा है, मात्रा घट रही है. फ्लोरा और फॉना की अनेक किस्में विलुप्त हो चुकी हैं या होने की कगार पर हैं. कारण भी हम मनुष्य ही हैं. इस स्थिति में बदलाव के लिए जलीय, आकाशीय और पृथ्वी पर व्याप्त जैव विविधता और प्रकृति के संरक्षण के लिए हमें आगे आना होगा. इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) ने इसी सिलसिले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के आ अबुधाबी में विश्व सम्मेलन आयोजन की योजना बनाई है. संगठन स्थापना के 75 वर्षों के इतिहास में पूर्व में भी प्रत्येक चार वर्षों में ऐसे सम्मेलन होते आए हैं. इनमें प्रकृति प्रेमियों ने अपनी पीड़ा व्यक्त की है. स्थिति में बदलाव के संकल्प लिए हैं. विभिन्न देशों की सरकारों ने लक्ष्यों का निर्धारण किया है. साथ ही यूनियन ने जैव विविधता की स्थिति की सतत समीक्षा की है.

कोलंबिया सिटी में संयुक्त राष्ट्र कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी 16) में भी जैव विविधता संरक्षण के लिए विश्व समुदाय ने जोरदार आवाज उठाई. लगभग 200 देशों के प्रतिनिधियों ने निष्कर्ष निकाला कि डायनोसोर युग के बाद विश्व में अब जैव विविधता को सर्वाधिक नुकसान हुआ है. लगभग 10 लाख प्रजातियों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने भी इस तथ्य को पुष्ट माना है. जैव विविधता पर संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक और रसायन हैं. रसायनों और प्लास्टिक के कुप्रभावों के चलते अनेक प्रजातियाँ नष्ट होने की कगार पर है. बढ़ती कृषि भूमि के रकबे, वन कटाई और शहरों के विस्तार से भी अनेक प्रजातियां संकट में हैं. टिटहरी और मोरों के समक्ष अंडे देने के स्थान का संकट आ चुका है. प्राकृतिक संसाधनों के न्यायोचित और टिकाऊ उपयोग का स्थान अंधाधुंध दोहन ने ले लिया है. वृक्षों की बेतहाशा कटाई और शिकार ने प्रजातियों को लीलना शुरू कर दिया है. जल स्त्रोतों में अवशिष्टों के बहाव के चलते स्वच्छ पानी में विचरण करने वाली प्रजातियों पर संकट है, वहीं नदियों से रेत के बेतहाशा उत्खनन के कारण कच्छ-मच्छ प्रजातियों के प्रसूति स्थल असुरक्षित हैं. नदियों पर निर्मित बांधों के कारण जलीय प्रजातियों की निर्बाध आवाजाही प्रभावित है. प्रतिकूल परिस्थितियों के चलते इन प्रजातियों के समक्ष भोजन सामग्री का भी संकट है, परिणाम स्वरूप इनका आकार और भार बदल रहा है.

जैव विविधता में गिरावट और जंतु-वानस्पतिक प्रजातियों की कमी ने विश्व भर के जैव विविधता प्रेमियों का का ध्यान आकर्षित किया है. मनुष्य का ध्यान केवल भोजन के लिए अनुकूल प्रजातियों के विकास की ओर है. उन वैविध्यपूर्ण प्रजातियों के संरक्षण की ओर नहीं जो संपूर्ण भोजन श्रृंखला को गति देती हैं. खेती-बाड़ी में भी चुनिंदा किस्मों की ओर ध्यान केंद्रित है. टर्मिनेटर सीड्स ने तो नया बवाल खड़ा किया है. वन, नम भूमि, कोरल रिफ और अन्य पारिस्थितिकीय तंत्रों पर आए संकट ने जैव विविधता को भी घेरा है. हालांकि रामसर साइट प्रचार-प्रसार ने लोगों में नम भूमि के प्रति संवेदना जागृत की है. भारतवासी रामसर साइट की अधिक संख्या में अधिमान्यता के प्रति चैतन्य हैं. समीक्षा करें तो बीती सदी में माँ वसुंधरा की गोद से 45 मौलिक वन क्षेत्र नदारद से हैं. हांलाकि कुछ क्षेत्रों में वन्य क्षेत्रों ने पुराना स्थान प्राप्त किया है, किंतु बड़े आकार में वन क्षेत्र सिकुड़े भी हैं. कुछ ही देश हैं जो अपने देश में वनक्षेत्र रकबे की बढ़त बनाए हुए हैं. मध्यप्रदेश के झाबुआ में संयुक्त वन प्रबंध समितियों ने स्थिति सुधारी है, वहीं इंदौर की रालामंडल पहाड़ी की चारों कंटीली बाड़ों की घिराई ने इसका प्राचीन वैभव लौटाया है. समुद्रों में विचरण करने वाली लगभग 25 प्रतिशत प्रजातियों के लिए कोरल रिफ आश्रय और भोजन का प्रमुख स्त्रोत है. कोरल रिफ की स्थिति भी जैव विविधता को प्रभावित करती है. कोरल रिफ समृद्ध पारिस्थितिकीय प्रणाली में से एक है. इनकी स्थिति भी खराब हो रही है. तटीय मेंग्रोव अनेक प्रजातियों की वासस्थान है, भी असुरक्षित हो चली हैं. इस कारण अनेक प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर है. इसका प्रभाव गंभीर रूप से भोजन श्रृंखला पर पड़ेगा.

सरकारें 30 प्रतिशत जमीन प्रकृति संरक्षण के लिए सुरक्षित करें

जलवायु परिवर्तन, ओजोन की पर्त पतली होना और वातावरण में बदलाव के चलते विश्व स्तर पर जैव विविधता पर आए संकट निवारण के लिए तीन बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए. विकसित देशों को विकासशील और अत्यल्प विकसित देशों हेतु जैव विविधता संरक्षण के लिए कोष नियमित और विस्तारित आकार में उपलब्ध कराया जाना चाहिए. वर्ष 2030 तक कोष का आकार 30 अरब डॉलर प्रति वर्ष किया जाना चाहिए. कोष उपलब्धता के नए स्त्रोतों और प्रणाली की पहचान हो. जैव विविधता संरक्षण में मूल निवासियों की सहभागिता सुनिश्चित करने के प्रयासों में तेजी लाई जाए. विश्व स्तर पर संरक्षण प्रक्रिया से जोड़ने के लिए अभियान चलाया जाए. सभी देशों की सरकारें जैव विविधता संरक्षण की वार्षिक योजना बनाने के साथ उन पर क्रियान्वयन और इसकी समीक्षा भी करें. सरकारें 30 प्रतिशत जमीन प्रकृति संरक्षण के लिए सुरक्षित करे. ऐसे व्यवसायों को दी जा रही राज सहायता घटाए जो प्रकृति को नुकसान पहुँचाते हों. उद्योगों के पर्यावरणीय प्रतिवेदनों का परीक्षण नियमित हो और प्रकृति संरक्षण निर्देशों का परिपालन सख्ती से सुनिश्चित हो. मांट्रियल ग्लोबल डायवर्सिटी फ्रेमवर्क 2022 के लक्ष्य का प्रभावशाली परिपालन हो. सभी जैव विविधता पर विद्यमान आसन्न संकट से पार पाया जा सकता है.

अस्पताल में मरीज को संक्रमण का खतरा

अस्पतालों में मरीजों की जान को बीमारी की बजाय वहां के संक्रमण से ज्यादा खतरा होता है. वहां अस्वच्छ हाथों से लगाई गई सीरींज, शंट तथा शरीर से निकले द्रव को संकलित करने के लिए लगाए गए उपकरण से इन्फेक्शन हो सकता है. इससे बैक्टीरिया व फंगस कीटाणु मरीज के रक्त प्रवाह में चले जाते हैं जो जानलेवा साबित होते हैं.

एंटीबायोटिक दवाइयों का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किए जाने से अब यह दवाएं भी संक्रमण को नहीं रोक पातीं. अमेरिका के सीडीसी के फंड से एम्स ने 7 वर्ष तक अध्ययन किया जिससे चिकित्सक समुदाय की शंकाओं की पुष्टि हुई. अस्पतालों में गंभीर मरीजों को दवाइयां, तरल पदार्थ या पोषण देने के लिए सेंट्रल लाइन ट्यूब लगाया जाता है. भारतीय अस्पतालों में सेंट्रल लाइन से जुड़े रक्तप्रवाह में संक्रमण के मामले काफी हैं. 1,000 में से 9 मामलों में इस तरह का संक्रमण हो जाता है. अमेरिका में 1,000 में से केवल 1 मरीज को ऐसा इन्फेक्शन होता है. अस्पताल में ऐसा संक्रमण होने पर लगभग 40 प्रतिशत मरीज मौत के मुंह में चले जाते हैं. पर्याप्त सावधानी बरतने से ऐसे संक्रमण पूरी तरह रोके जा सकते हैं. इस मामले में डॉक्टर, नर्स तथा अन्य स्टाफ को अत्यंत सतर्क रहना होगा.

सभी को अनिवार्य रूप से 5 बुनियादी सुरक्षा कदम उठाने होंगे जिनमें साबुन से भलीभांति हाथ धोना, हैंडग्लोव पहनना आदि का समावेश है. इस चेक लिस्ट से एक भी आइटम नहीं छूटना चाहिए. यह कुछ ऐसा ही है जैसा अंतरिक्ष उड़ान के समय सावधानी बरती जाती है. मरीज को सेंट्रल लाइन लगाते समय सारे प्रोटोकॉल का पालन अनिवार्य किया जाना चाहिए. डॉक्टरों के वस्त्र व उपकरण भी पूरी तरह स्वच्छ व कीटाणुमुक्त होने ही चाहिए. डॉक्टर की जरा सी लापरवाही मरीज के लिए जानलेवा बन जाती है. इसके लिए डॉक्टर, नर्स व सपोर्टिंग स्टाफ को बेहद सतर्क रहना होगा ताकि इन्फेक्शन न होने पाए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जरांगे ने छोड़े आलोचना के ड्रोन उनका मुकाबला करेगा कौन?

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मराठा आंदोलन के नेता मनोज जरांगे ने एक साथ अनेक नेताओं पर तीखी आलोचना के ड्रोन छोड़ दिए हैं. उन्होंने कहा कि मनसे प्रमुख राज ठाकरे कच्चे कान के हैं. भले ही पार्टी बर्बाद हो जाए लेकिन फडणवीस उनके यहां चाय पीने आ जाएं तो खुश हो जाते हैं जबकि विधानसभा चुनाव में फडणवीस ने उनके बेटे अमित ठाकरे का ही गेम कर दिया था. जरांगे ने नितेश राणे को छछूंदर कहा तथा मंत्री चंद्रकांत पाटिल को बुद्धिहीन बताते हुए कहा कि ज्यादा बोलोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे.

हमने कहा, जब उनका सरनेम जरांगे है तो जली-कटी बातें करेंगे ही. आपने पुराना गीत सुना होगा जो आज के सत्ताधारियों पर फिट बैठता है- जलने वाले जला करें, किस्मत हमारे साथ है. जलन-कुढ़न व्यक्ति के स्वभाव में है. शिशुपाल भी श्रीकृष्ण से जलता था या द्वेष रखता था. सौतिया डाह का मतलब सौत से जलन होता है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यदि भारत में जरांगे हैं तो पाकिस्तान में वहां के राष्ट्रपति का नाम जरदारी है. कपड़ों में चांदी की जरी लगाने के काम को जरदोजी कहा जाता है. जरांगे शब्द में 2 शब्द समाए हुए हैं- जरा और अंग! वृद्धावस्था को जरावस्था भी कहा जाता है जिसमें अंग या शरीर जीर्ण या कमजोर हो जाता है. जरांगे के पानी पीना बंद करने से डिहाइड्रेशन व किडनी पर असर पड़ सकता है. वे अनशन करें लेकिन जल पीते रहें क्योंकि जल ही जीवन है. महात्मा गांधी भी अनशन के दौरान नींबू पानी पीते रहते थे.' हमने कहा, जरांगे मर्द मराठा हैं. वह पीछे नहीं हटेंगे. आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे. गणेशोत्सव के समानांतर उनका आमरण अनशनोत्सव भी चल रहा है. सरकार 2 पाटों के बीच फंसी है. वह ओबीसी में से काटकर मराठा आरक्षण दे नहीं सकती. उसे ओबीसी और मराठा दोनों को संभालना है. ऐसे में मुख्यमंत्री देवेंद्र क्या करेंगे?

पड़ोसी ने कहा, 'जरांगे ने नया जीआर जारी करने का विकल्प दिया है. उन्होंने कहा है कि कानूनी बाधा से बचने के लिए सरसकट या एकमुश्त शब्द हटा दें. अब देखना होगा कि स्थितियां कैसी बनती हैं. एक शेर है- इब्तदाये इश्क है, रोता है क्या, आगे-आगे देखिए होता है क्या !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12011

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		■	3		4
	■		■	5		■	
6	7	■	■	■	8	9	
■	10	11	■	12			■
13			■		■	14	15
	■	16	17		■	18	
19	20	■		■	21	■	
22		■	■	23			

बाएं से दाएं
1. हो सकना, मुमकिन होना 3. न मरने वाला, चिरंजीवी 5. लताच्छादित स्थान या मंडप 6. घास-पत्ती के रंग का, सब्ज 8. भेड़ का बच्चा 10. माफी 12. रसहीन 13. प्रभाव, 14. बुरी आदत (डई) 16. निबटाना, काम को अंजाम देना 18. वह औषधि जो नाक से सूंघी जाए 19. भगवान, श्रीरामचंद्र 22. वित्त, संपत्ति, पूंजी, जोड़ का चिन्ह 23. सबसे अधिक प्रिय, पति, स्वामी

ऊपर से नीचे
1. जमा करना, एकत्र करना (सं.) 2. वन में उत्पन्न होने वाला 3. राजस्थान मेंएक प्रसिद्ध संत की दरगाह का शहर 4. कंठाग्र करने के लिए पद या वाक्य का बार-बार बोलकर पाठ करना 7. दैत्य, असुर 9. जोर से दबाना 11. मार डालने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला 12. बुराई या निंदा करना 13. जुर्म, पाप, दंड योग्य कर्म 15. प्रणाम, सलाम, किसी बात की स्वीकृति (उर्दू) 17. किरण, घोड़े की लगाम (सं.) 19. नरेश 20. इच्छा, इरादा, विचार 21. जीत, विजय, विष्णु के एक द्वारपाल का नाम

Solution 12010

सं	क	ट	का	ल	■	शो	क
त	ल	■	या	च	ना	■	ल्ल
■	■	अ	प	ना	प	न	■
को	ला	ह	ल	■	ना	न	स
शि	■	म	ट	की	■	द	म
श	त	क	■	क	म	■	र्थ
■	कि	■	पा	र	द	र्श	क
बि	या	बा	न	■	द	■	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेंगी, व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, व्यय में वृद्धि होगी, मानसिक अशांति रहेगी, वर्ष के मध्य में शासन से लाभ प्राप्त होगा, व्यक्तित्व का विकास होगा, सामाजिककार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के अन्त में भागदौड़ से सफ्लता प्राप्त होगी, आर्थिक कार्यो में लाभ प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, तथा व्यक्तिगत संबंधों में मनमुटाव हो सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा आदि से सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंको प्रतिस्पर्धा में सफ्लता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, हंसमुख, मिलनसार, अपने कार्य के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार होगा. अपने मन की बात दूसरों पर प्रकट नहीं करेगा. मित्रों की संख्या अधिक होगी, किन्तु वास्तविक मित्रों का अभाव रहेगा. दूर दूर घूमने का शौकीन होगा.

मेष-सहयोगी आपकी मेहनत का लाभ उठायेंगे. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. सोचे कामकाज में सफ्लता मिलने से मन प्रसन्न रहेगा.

वृषभ- शारीरिक सुख एवं पारिवारिक शांति के लिये समय अनुकूल रहेगा. जीवनसाथी के सहयोग से अवरोधों का निवारण होगा. पदोन्नति का योग बन सकते हैं.

मिथुन- पारिवारिक मित्रों से मुलाकात सुचाद रहेगी. व्यर्थ के वाद विवाद को टालना हितकर रहेगा. वार्ता उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध होगी.

कर्क- परिजनों पड़ौसियों का अनायास विवाद हो सकता है. कामकाज बनने का योग है. लाभदायक अवसरों का योग है इन्हें हाथ से न जाने दें.

सिंह- श्रम साध्य कार्यो में प्रयास करने पर सफ्लता मिलेगी. प्रवास का योग है. आमोद प्रमोद पर खर्च होगा. आलस्य को त्यागना हितकर रहेगा.

कन्या- सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी. मनः स्थिति संतोषजनक रहेगी. भाई से मदद प्राप्ति का योग है. धर्म कर्म में आस्था बढ़ेगी. मन प्रसन्न रहेगा.

तुला- आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. व्यापार की योजना बनेगी. अतिथि आगमन होगा. निजी दायित्वों की पूर्ति का योग है.

वृश्चिक- पराक्रम में वृद्धि होगी. नये लोगों के प्रति रूचि रहेगी. अधिक जल्दबाजी न करें. मांगलिक कार्यो में खर्च होगा. परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- अपनों के कारण मुश्किल हो सकती है. आय में कमी होगी. कामकाज में बाधा आने का योग है. परिश्रम की अधिकता रहेगी, खर्च अधिक होगा.

मकर- आज का दिन शुभ एवं अनुकूल रहेगा. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण विचार विमर्श होगा. अतिथि आगमन होगा. प्रसन्नता बनी रहेगी.

कुम्भ- राजकीय कार्यो में सफ्लता मिलेगी. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण योजनाओं पर विचार विमर्श होगा. व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

मीन- स्वास्थ्य में सुधार होगा. कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी. व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा. मानसिक संतोष बना रहेगा. प्रापर्टी के कार्य बनेंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

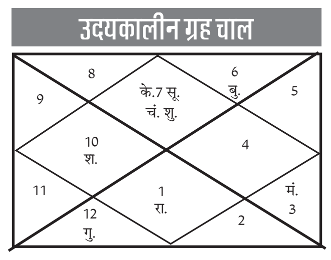

पंचांग

रा.मि. 12 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल एकादशी बुधवासरे रात 1/38, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे रात 9/45, आयुष्मान योगे दिन 3/57, वणिज करणे सू.उ. 5/45 सू.अ. 6/15, चन्द्रचार धनु रात 4/0 से मकर, पर्व- पदमा एकादशी व्रत, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

त्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल एकादशी को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रभाव से तांबा, पीतल, एवं कपास, सन् की लाईन, पूर्व की तरह चलेगी. गेहूँ, जौ, चना, मोट, मूँग, ज्वार बाजरा, आदि में नरमी रहेगी. वायदा मार्केट में आज के बने भाव उँचे व नीचे महत्वपूर्ण साबित होंगे. भाग्यांक 4853 है.

SUDOKU 7143

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7142

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3